International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 12-09-2025, Accepted: 12-10-2025, Published: 27-10-2025
Volume 7, Issue 5, 2025, Page No. 115-118

सिंधु सभ्यता के पतन में नदीजन्य कारकों की भूमिका का अध्ययन

डॉ. नारायण लाल माली
सहायक आचार्य–इतिहास, मा.ला.व.राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

सारांश

शोध सार – सिंधु सभ्यता संभवतः तत्कालीन विश्व की सभ्यताओं में सबसे अधिक विस्तृत भू–भाग पर पल्लवित–पुष्पित हुई थी। सिंधु और उसकी सहायक नदियों तथा अन्य स्थानों पर इसके 1000 से भी अधिक स्थल खोजे जा चुके हैं, जो भारत–पाक व अफगानिस्तान तक विस्तृत है। लगभग 1000 वर्ष तक अस्तित्व में रहने के बाद यह सभ्यता पतन की ओर अग्रसर हुई। इसके पतन के कारणों की पड़ताल करते हुए पुरातत्वविदों ने विभिन्न विचार व्यक्त किए हैं। अधिकांश विद्वान इस सभ्यता के पतन के लिए नदीजन्य कारकों को उत्तरदायी मानते हैं। सिंधु सभ्यता के अधिकांश नगर नदियों के तट पर विकसित हुए। विकास की चरमावस्था पर नदियों में आई बाढ़ के कारण उनके रिहाईशी व कृषि–भूमि क्षेत्र नष्ट हो गए। भूकंप या अन्य भूगर्भिक गतिविधियों के कारण नदियों के मार्ग बदल लेने से कृषि उत्पादन में कमी व व्यापारिक नगरों का ह्रास, वर्षा की कमी के कारण शुष्क जलवायु की स्थिति से अन्न उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव से उनका अन्य क्षेत्रों की ओर पलायन कर जाना आदि नदीजन्य कारक सिंधु सभ्यता के पतन के लिए उत्तरदायी ठहराए जाते हैं। यद्यपि लिखित एवं प्रामाणिक साक्ष्यों के अभाव में सिंधु सभ्यता के पतन के विषय में सटीक दावा नहीं किया जा सकता है। आज भी इसके पतन के कारण रहस्य बने हुए हैं और इस संबंध में खोज जारी है। हो सकता है इस सभ्यता के पतन के विषय मे भविष्य में कोई ठोस कारण निकल कर आए। प्रस्तुत शोध–आलेख में सर्वेक्षण एवं उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के अध्ययन के आधार पर विभिन्न पुरातत्वविदों द्वारा सिंधु सभ्यता के पतन के लिए नदीजन्य कारकों को उत्तरदायी ठहराने की भूमिका की पड़ताल करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः सभ्यता, नदीजन्य, पुरातत्ववेता, भूगर्भिक गतिविधियाँ, उत्खनन, शुष्क जलवायु, व्यापारिक नगर।

मूल आलेख – ईस्ट इंडिया कंपनी के एक पूर्व कर्मचारी चार्ल्स मैसन द्वारा 1826 ईस्वी में सर्वप्रथम हड़प्पा के टीलों का उल्लेख करने के लगभग 100 साल बाद 1920–21 में दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा का उत्खनन कार्य करने के दौरान किसी को भी यह अनुमान नहीं था कि इस स्थल की खुदाई से एक ऐसी समृद्ध और विस्तृत भू–भाग में फैली सभ्यता प्रकाश में आएगी, जिसका नगर नियोजन, सफाई व्यवस्था, व्यापार–व्यवसाय प्रबंधन आदि 19वीं शताब्दी के यूरोपीय नगरों से बेहतर होगा। 1924 में ए.एस. आई. के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल, जॉन मार्शल द्वारा हड़प्पा में एक समृद्ध एवं प्राचीन नगरीय सभ्यता मिलने की उद्घोषणा ने भारतीय सभ्यता को भी मेसोपोटामिया अथवा मिश्र की प्राचीन सभ्यताओं के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया।[1] तब से लेकर अब तक सिंधु और उसकी सहायक नदियों तथा अन्य स्थलों से इस सभ्यता से जुड़े 1000 से भी अधिक स्थलों की पहचान की जा चुकी हैं, जिनमें 600 से अधिक क्षेत्र भारत में, 406 पाकिस्तान में और एक अफगानिस्तान के शोरतुघई से मिला है। इनमें से 97 स्थानों पर अब तक उत्खनन कार्य संपन्न किया गया। सिंधु सभ्यता 6,80,000–8,00,000 वर्ग किलोमीटर के विशाल क्षेत्र में फैली हुई थी। इस सभ्यता के अंतर्गत अफगानिस्तान, पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रदेश (पाकिस्तान में), जम्मू, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश (भारत में) का एक बड़ा हिस्सा सम्मिलित था। उत्तर में जम्मू में मांडा, दक्षिण में सूरत में मालवण, पश्चिम में मकरान तट पर सुतकागेंडोर तथा पूर्व में सहारनपुर जिले (उत्तर प्रदेश) का आलमगीरपुर, इस सभ्यता की सीमाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। अफगानिस्तान के शोरतुघई में सिंधु सभ्यता का अलग से एक केंद्र मिला है।[2]

सिंधु स्थल अपने आकार–प्रकार में कई तरह के थे। मोहनजोदड़ो (200 हैक्टेयर), हड़प्पा (150 है.), गनवेरी वाला (81.5 है.), राखीगढ़ी (80 है.) और धौलावीरा (100 है.), इस सभ्यता के सबसे बड़े केंद्र कहे जा सकते हैं। सिंन्ध में नगुर, थारोवारोदड़ो, लखुइन्जोदड़ो तथा बलूचिस्तान में नॉनदौरी लगभग 50 है. आकार वाले नगर थे। अभी हाल ही में पंजाब से विशाल क्षेत्र में फैले नगरों, ढालेवा (150 है.), गुरनी कलां–प्रथम (144 है.), हसनपुर–द्वितीय (100 है.), लखमीर वाला (225 है.), बगलिया दा थेह (100 है.) के विषय में रिपोर्ट मिली है, मगर इन स्थलों के बारे में अभी विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। 10–50 हेक्टेयर वाले नगरों में जूदेरजोदड़ो और कालीबंगा सम्मिलित है। आमरी, लोथल, चन्हूदड़ो और रोजड़ी का आकार 5–10 हेक्टेयर के मध्य हैं। अल्लाहदीनों, कोटदीजी, रोपड़, बालाकोट, सुरकोटड़ा, नागेश्वर, नौशारो और गाजीशाह जैसे सिंधु स्थल 1–5 है. आकार में बसे हुए थे। कई स्थल तो इससे भी छोटे आकार के हैं।[3]

सिंधु सभ्यता के काल–निर्धारण के संबंध में विद्वानों के अपने–अपने तर्क हैं। फिर भी यह माना जाता है कि 2500 ई.पू. के लगभग यह सभ्यता अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में थी और 2300–2000 ईसा पूर्व तक यह सभ्यता अपने विकास की पराकाष्ठा पर थी।[4] लेकिन लगभग 1000 वर्ष तक अस्तित्व में रहने के बाद सिंधु नगरों में पतन के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। सामान्यतः किसी भी सभ्यता के पतन के अनेक कारण होते हैं और किसी एक सर्वमान्य निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन होता है। पूर्व–ऐतिहासिक काल की सभ्यता के पतन की बात हो, तो समस्या और भी जटिल हो जाती है। सिंधु सभ्यता, जो कि एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र में फैली हुई थी, के पतन के लिए किसी एक कारण को जिम्मेदार मानना उपयुक्त नहीं होगा। यही नहीं, संभवतः एक स्थल के पतन के भी अनेक कारण रहे होंगे। प्रामाणिक साक्ष्य नहीं मिलने से विभिन्न अनुमानों में से कौन–सा कारण पूर्ण रूप से इस सभ्यता के पतन के लिए जिम्मेदार था – यह निष्कर्ष निकलना भी आसान नहीं है। नगरों के पतन की तिथियाँ और उनकी पतन की दर में भी अंतर दिखाई देता है। मोहनजोदड़ो और धौलावीरा जैसे स्थलों के क्रमिक पतन के प्रमाण मिलते हैं, तो कालीबंगा और बनावली जैसे नगरों का अंत अचानक हो गया। यही कारण है कि सिंधु सभ्यता के उद्भव के

साथ ही इसके पतन के कारण भी अध्येताओं के लिए रहस्य बने हुए हैं।

सिंधु स्थलों के उत्खनन में मिले अवशेषों के आधार पर इस सभ्यता के पतन के विषय में विद्वानों ने भिन्न–भिन्न व्याख्याएँ की हैं। प्राकृतिक आपदाएँ, जो अचानक और एक बार हुई होगी, की सिंधु नगरों के पतन में भूमिका रही होंगी। ज्यादातर विद्वान इस सभ्यता के पतन में नदियों की बाढ़ को उत्तरदायी मानते हैं। इन विद्वानों में जॉन मार्शल, मैके, एस.आर.राव, एम.आर. साहनी आदि प्रमुख हैं। सिंधु नगर नदियों के तट पर बसे हुए थे, जिनमें बाढ़ आती रहती थी। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के उत्खनन से पता चलता है कि कई बार इन नगरों का पुनर्निर्माण किया गया। बाढ़ के कारण लोगों को अपना मूल निवास स्थान छोड़ना पड़ा होगा और वह अन्यत्र बसने के लिए विवश हुए होंगे। मैके लिखते हैं, "मोहनजोदड़ो को संभवतः अपनी स्थापना के समय से ही एक बहुत बड़े शत्रु का सामना करना पड़ रहा था। यह था सिंधु। ..... इसके उद्‌गम क्षेत्र में बर्फ और हिम के असाधारण तेज गति से पिघलने या हिमसेतुओं के टूटने से या सिंध और बलूचिस्तान में बहुत अधिक वर्षा होने से बहुत तेज बाढ़ें आ सकती हैं और आया करती हैं। इस नगर के दो भिन्न स्तरों पर जिनमें से एक बहुत नीचे हैं, तटबंधों और कुओं की चिनाई से यह सिद्ध होता है कि मोहनजोदड़ो के आरंभिक काल में एक बड़ी बाढ़ आई थी और फिर ऐसी ही दूसरी बाढ़ से इसका ह्रास आरंभ हुआ था। इन दोनों अवसरों पर नगर को कुछ समय के लिए खाली कर देना पड़ा था और जब सारा खतरा टल गया था, तब इसे आबाद कर लिया गया था। अंततः मोहनजोदड़ो और हड़प्पा दोनों लगभग एक ही समय में छोड़ दिए गए। हड़प्पा को छोड़ने का कारण जाहिर है रावी की धारा का हट जाना था, जिसके तट पर यह स्थित था। यह पता नहीं चलता कि मोहनजोदड़ो के निवासियों को यह नगर अंततः क्यों छोड़ना पड़ा। संभव है सिंधु की धारा में परिवर्तन ही इसका निर्णायक कारण रहा हो।"[5]

मोहनजोदड़ो से प्राप्त मलबे और नदियों से लाए गए तलछट की एकाधिक परतों की उपस्थिति सिंधु नदी में आई बाढ़ की ओर संकेत करती है। मैके को चन्हूदड़ों की खुदाई के दौरान भी बाढ़ आने के प्रमाण मिले हैं। उनका मत है कि बाढ़ की विभीषिका से बचने के लिए यहाँ के निवासी ऊँचे स्थानों पर जाकर बस गए होंगे। एस.आर.राव को भी लोथल और भगतराव में बाढ़ के प्रमाण मिले हैं। बाढ़ के कारण इनके समृद्ध बंदरगाह नष्ट हो गए होंगे और भवन ढह गए होगें।[6] राव के अनुसार एक बाढ़ लगभग 2000 ईसा पूर्व और दूसरी उसके लगभग एक शताब्दी बाद आई थी। उनका मत है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में भी भीषण बाढ़ इसी समय आई होगी। इमारतों को बाढ़ से बचाने के लिए चारों ओर रक्षा दीवार का निर्माण किया गया था। भीषण बाढ़ से खेती नष्ट हो जाती रही होगी और नहरें रेत से पट जाती रही होगी। राव का यह भी मानना है कि "ऐसे अवसरों पर सिंधु घाटी से सिंधु सभ्यता के कुछ लोग घग्घर की घाटी ओर कुछ सतलज की ओर गए। रोपड़ और कुछ अन्य सतलज की समीपवर्ती बस्तियाँ शायद बाढ़ पीड़ित लोगों ने बसाई थी। मोहनजोदड़ो, लोथल और अन्य नगरों का क्षेत्र पहले से कम हो गया और वहाँ पतन के चिह्न दिखाई देने लगे।"[7]

कुछ विद्वान इस सभ्यता के पतन को विवर्तनीय घटनाओं के परिणाम के रूप में देखते हैं। इस क्रम में एम.आर. साहनी, रॉबर्ट एल. राइक्स और जार्ज एफ.डेल्स ने मोहनजोदड़ो में बाढ़ के प्रमाणों को विवर्तनीय घटनाओं का परिणाम माना है। डेल्स ने बताया कि विवर्तनीय गतिविधियों का मुख्य केंद्र सेहवान नामक एक स्थान रहा होगा, जो मोहनजोदड़ो से 90 मील दूर स्थित है। विवर्तनीक गतिविधियों से जुड़े इस सिद्धांत के अनुसार सिंधु नदी के बहाव में अवरोध आने से इस क्षेत्र में एक विशाल प्राकृतिक बाँध का निर्माण हो गया, जिससे सिंधु नदी का समुद्र की ओर बहाव रुक गया। इस बाँध के अचानक फटने से नीचे की ओर असाधारण बाढ़ आई होगी। अन्ततः मोहनजोदड़ों जलमग्न हो गया व गाद से भर गया। मोहनजोदड़ों में गाद की कई परतें और बहुस्तरीय निर्माण के साक्ष्य दोनों ही इस बात का संकेत देते हैं कि शहर में इस तरह लम्बे समय तक और विनाशकारी रूप से कम से कम पाँच बार और शायद इससे भी ज्यादा बार बाढ़ आई होगी।[8] इस दृष्टि से यह माना जा सकता है कि नदी के चैनलों में गाद जमने से व्यापार के केंद्रों के रूप में नदी के बन्दरगाहों का महत्त्व कम हो गया होगा और यह उनके पतन या विनाश का कारण बना होगा।

एम.आर.साहनी ने 1940–41 ईस्वी में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर यह मत व्यक्त किया कि सिंधु सभ्यता के पतन का कारण जल–प्लावन था। 1952 में उन्होंने अपनी पुस्तक 'मैन इन इवोल्यूशन' में इसका उल्लेख किया है। हाल के वर्षों में असम और भारत के अन्य हिस्सों तथा विश्व के कई क्षेत्रों में आई बाढ़ों के कारण हुए व्यापक विनाश इस ओर संकेत करते हैं। भीषण बाढ़ के कारण बड़े–बड़े भू–भाग डूब जाते हैं और कई बार संपूर्ण बस्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। वस्तुतः कुछ नदियाँ अन्य की तुलना में अधिक संवेदनशील होती हैं और उनके मार्ग भी अधिक अस्थिर होते हैं। सिंधु नदी इन्हीं अनिश्चित और बाढ़ प्रवण नदियों की श्रेणी में आती है। साहनी को सिंधु क्षेत्र से ऐसे प्रमाण मिले है। प्राचीन काल में सिंधु घाटी में असाधारण परिमाण की बाढ़ अवश्य आई होगी। यह बाढ़ आंशिक रूप से या मुख्य रूप से सिंधु सभ्यता के अचानक पतन और अंतिम विनाश के लिए जिम्मेदार थी।[9] साहनी को सिंध के हैदराबाद से लगभग 40 किलोमीटर दक्षिण में सिंधु नदी की सतह से 60 फुट की ऊँचाई पर कछारी भूमि (जलोढ़ मिट्टी) मिली है, जिसमें सामान्य जल में रहने वाले घोंघों के खोल मिले। इस जलोढ़ को इस ऊँचाई से ऊपर लंबे समय तक बाढ़ का कारण बताते हुए साहनी ने अपने डाउनस्ट्रीम उत्थान के सिद्धांत का उल्लेख किया।[10]

अमेरिकी जल वैज्ञानिक आर.एल.राइक्स ने मोहनजोदड़ो में भू–गर्भ वेधन कर उससे प्राप्त सामग्री के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि "अरब सागर के उत्तरी छोर पर सिंधु सभ्यता के काल में विवर्तनीक हलचल के कारण धरातल का स्तर ऊपर उठता गया और नदियों के मुहाने पर नदी के प्रवाह की दिशा के विपरीत उससे समकोण बनाते हुए विशाल मात्रा में रेत जमा हो गई। सिंधु नदी का पानी समुद्र में गिरने के बजाय रुकता गया और इससे एक झील का निर्माण हो गया। पानी के बह जाने के पश्चात् कीचड़ और दलदल बढ़ता गया होगा। यह स्थिति कई बार बनी होगी, दलदल के जमाव का उनके व्यापार पर दुष्प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था, जिससे धीरे–धीरे सिंधु नगर उजड़ गए।"[11] राइक्स बार–बार आई बाढ़ को नगरों के पतन का कारण मानते हैं। उनका मत है कि "सिंधु नदी में आई बाढ़ ही सिंधु के तट पर बसे नगरों के पतन का कारण रही। सिंधु नदी में आई बाढ़ के कारण मोहनजोदड़ों में 20 से 30 फीट तक गाद जमा हो गई जो 5 से 7 बार आई बाढ़ के कारण जमा हुई होगी। बाढ़ के कारण सिंधु तट पर बसे नगर नष्ट हो गए।"[12] एच.पी.लैम्ब्रिक नगरों के पतन में नदी द्वारा मार्ग बदलने को महत्त्व देते हैं। उनका मानना है कि "मोहनजोदड़ो को छोड़कर सिंधु नदी ने अपने प्रवाह की धारा बदल ली और यहाँ से 30 मील पूर्व में हटकर बहने लगी। यह घटना भूगर्भीय हलचल के कारण घटी और शायद संयोगवश भी।"[13] यह एक बड़ी प्रभावशाली घटना रही होगी। सिंधु नदी के मार्ग में आये विनाशकारी परिवर्तन के कारण शहर की आबादी के लिए अन्न उपजाने वाले क्षेत्र सूख गए, जिसके कारण सभ्यता का पतन हो गया।[14]

एम.आर.साहनी भी नदियों द्वारा मार्ग बदलने को सिन्धु स्थलों के पतन का कारण बताते हैं। उनका मानना है कि सिंधु ने अपनी धारा बदल ली, जबकि सरस्वती व अन्य नदियाँ वर्षा की कमी के

कारण सूख गई। लगता है कि सिंधु की पुरानी धारा कच्छ के रन के साथ चलती थी और नदी की धारा संभवतः कच्छ की खाड़ी में गिरती थी, ऐसे कई संकेत मिलते हैं कि पश्चिमी भारतीय मैदानों का विकास सिंधु और अन्य नदियों के विकास और सिंधु सभ्यता के विकास से जुड़ा हुआ है। नदी के मार्ग में परिवर्तनों के साथ बस्तियाँ प्राकृतिक रूप से घट गई और अंततः लुप्त हो गई। नदियों के मार्ग परिवर्तन ने सिंधु सभ्यता के पतन में भूमिका निभाई।[15]

घग्घर–हकरा घाटी में स्थित सिंधु स्थल नदियों के भूमिगत हो जाने और भूमिगत रूप से बहने की परिघटना के कारण प्रभावित हुए, ऐसा माना जाता है कि सतलज तथा यमुना नदियाँ कभी घग्घर में ही मिलती थी। किंतु विवर्तनीक गतिविधियों के कारण यमुना, गंगा–तंत्र में समा गई और सतलज को सिंधु ने अपनी ओर खींच लिया, इससे घग्घर को प्राप्त होने वाला जलस्रोत काफी कम हो गया। यही उस क्षेत्र (कालीबंगा) में सभ्यता के पतन का मुख्य कारण प्रतीत होता है। डेल्स के अनुसार 1750 ई. पू. के आस–पास नदियों के इस तरह के मार्ग परिवर्तन के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। लगभग यही तिथि कार्बन–14 विधि से कालीबंगा में सिंधु संस्कृति के समाप्त होने की पता चलती है। नदियों के मार्ग परिवर्तन के कारण सिंधु बस्तियों में पीने और सिंचाई के लिए जल का अभाव हो गया होगा। इस कारण इस क्षेत्र में अन्नाछादन हो गया होगा।[16]

एम.आर. मुगल का मत है कि भू–गर्भीय परिघटनाओं के बाद इस क्षेत्र में विद्यमान पुरातात्विक स्थलों की संख्या काफी कम होने लगी। लगभग 2100 ईसा पूर्व एक और बड़ा जल–विज्ञान संबंधी परिवर्तन हुआ, जब सतलज नदी से एक चैनल के माध्यम से जल–आपूर्ति काफी हद तक कम हो गई, जिसके कारण बस्तियों को एक सीमित क्षेत्र में स्थानांतरित करना पड़ा। घग्घर–हकरा पर मौजूदा बसावट के स्वरूप में परिवर्तन हुआ, जो भौतिक संस्कृति में आए परिवर्तनों के साथ मेल खाता था। नदी के मार्ग में परिवर्तन और उसके परिणामस्वरूप जल–आपूर्ति में कमी या भारी कमी के कारण निर्वाह अर्थव्यवस्था और सामाजिक संगठन पर पडने वाले प्रभाव कहीं अधिक विनाशकारी थे। मुगल का कहना है कि सिंधु सभ्यता के पतन और अंततः विलुप्ति के लिए सीधे तौर पर नदी–परिवर्तनों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।[17]

जी. एफ. डेल्स सिन्धु के साथ–साथ अन्य नदियों के मार्ग परिवर्तन को भी सिन्धु स्थलों के पतन के लिए जिम्मेदार मानते हैं। उनके अनुसार कालीबंगा का विनाश घग्घर तथा उसकी सहायक नदियों के विनाश के कारण हुआ। इसी क्रम में एम.एस. वत्स ने हड़प्पा के विनाश का कारण "रावी नदी के मार्ग परिवर्तन को माना है।"[18]

रावी, जो हड़प्पा के बिल्कुल समीप बहती थी, बाद में दूर हटकर बहने लगी। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जल के स्रोतों का अधिक दूर होना हड़प्पावासियों की समृद्धि पर घातक प्रभाव डालने वाला सिद्ध हुआ होगा। नागरिकों का यातायात और व्यापार बहुत कुछ नदी के माध्यम से ही होता था और नदी से दूर जाने पर यह कठिन हो गया होगा।[19]

कुछ सिंधु स्थलों से इस बात के प्रमाण मिले हैं कि भूमिगत जल–तल कुछ ऊँचा हो गया था। सिंधु नदी अपने साथ जो मिट्टी बहाकर लाती थी, उसके जमाव के कारण नदी का तल ऊपर उठता गया और इसके साथ ही उसके आस–पास के मैदानी क्षेत्र का जल–तल भी। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रही और कई पीढियों के अंतर में नदी का तल काफी ऊँचा हो गया तथा नगरों को बाढ़ का खतरा बढ़ गया होगा। व्हीलर मानवीय व्यवहार या गतिविधियों को भी सिन्धु स्थलों के पतन के लिए उत्तरदायी मानते हैं। उनका मानना है कि मानवीय अनुशासन में भी कमी आ गई हो और सिंचाई के लिए बनाई गई नहरें तथा बाँधों के प्रबंध में अनियमितता से उपज में कमी आई होगी। दूसरी ओर जल–प्लावन के कारण सभ्यता के पतन में तेजी आई होगी। डेल्स के अनुसार तीन प्राकृतिक शक्तियों ने सिंधु नगरों (सुतकागेंडोर, सोत्काकोह, बालाकोट) को समुद्र तट से दूर करने में योगदान किया। इसे तीन घटनाओं – समुद्र तट की भूमि का सतत रूप से ऊपर उठना, नदियों की लाई हुई मिट्टी के जमाव से उनके मुहानों का अवरुद्ध होना और स्थान–स्थान पर हवाओं द्वारा रेत का जमा किया जाना, के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। डेल्स का मानना है कि "समुद्र तट का ऊपर उठना लगभग 480 किलोमीटर के मकरान तट तक ही सीमित नहीं रहा होगा। बल्कि इस प्रक्रिया ने धीरे–धीरे सिंधु के निचले भाग को भी प्रभावित किया होगा।"[20]

एक अन्य विचार के अनुसार सागर के तटीय क्षेत्र का अचानक समुद्र–स्तर से ऊँचा हो जाना भी सिन्धु सभ्यता के पतन का एक महत्त्वपूर्ण करक हो सकता है। "अरब सागर के तटीय क्षेत्र में अचानक समुद्र का स्तर ऊँचा हो गया, जिससे बाढ़ की गतिविधियाँ बढ़ी और मिट्टी में लवण की मात्रा बढ़ने लगी। समुद्र के स्तर में हुए परिवर्तन के कारण सिंधु सभ्यता के तटीय क्षेत्रों का सामुद्रिक व्यापार प्रभावित हुआ हो और धीरे–धीरे वे उजड़ गए।"[21]

आरेल स्टीन और ए.एन. घोष जैसे विद्वान सिन्धु सभ्यता के पतन के लिए जलवायु परिवर्तन को जिम्मेदार मानते हैं। उनका मानना है कि सिंधु सभ्यता का पतन जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ। सिंध, राजस्थान और पंजाब में पहले अच्छी वर्षा होती थी तथा इन क्षेत्रों में घने वन स्थित थे। ईंटें पकाने तथा मकान बनाने के लिए जंगलों की कटाई करने से धीरे–धीरे जमीन पर घास की छाया समाप्त हो गई, जिससे वर्षा में कमी आई और कृषि उत्पादन घट गया होगा। जंगलों की कटाई से सूखे जैसी स्थिति उत्पन्न हुई तथा यहाँ के निवासी अन्न की कमी से भूखमरी के शिकार हो गए। जलवायु परिवर्तन से नदियाँ भी सूख गई तथा सिंधु नगरों का पतन हो गया।[22]

विद्वानों का एक वर्ग प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग, जनसंख्या और मवेशियों के बढ़ते हुए दबाव आदि को भी सिन्धु स्थलों के पतन के कारकों के रूप में देखते हैं। गुरदीप सिंह का भी मानना है कि सिंधु सभ्यता का पतन शुष्क जलवायु के कारण हुआ। ऐसा भी माना जाता है कि सिंधुवासी कृषि के लिए अपने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग कर रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम होने लगी, बाढ़ की घटनाएँ बढ़ गई होगी और मिट्टी में लवणता की मात्रा में वृद्धि हुई होगी। इसी प्रकार फेयर सर्विस का निष्कर्ष है कि "सिंधु सभ्यता का पतन वहाँ पर जनसंख्या और मवेशियों के बढ़ते हुए दबाव के कारण हुआ था। क्योंकि इनकी बढ़ती हुई आवश्यकताएँ हड़प्पा सांस्कृतिक क्षेत्र में विद्यमान संसाधनों के द्वारा पूरी नहीं की जा रही थी।"[23]

बाढ़ के कारण सिंधु सभ्यता का ही पतन नहीं हुआ, वरन् ऐसे और भी उदाहरण हैं, जहाँ बाढ़ के विनाशकारी प्रभाव ने प्राचीन बस्तियों को समाप्त कर दिया। बी.बी.लाल ने (1953 में) उल्लेख किया है कि प्रागैतिहासिक हस्तिनापुर का पतन भी गंगा में आई एक बड़ी बाढ़ के कारण हुआ था। बी.बी.लाल के अनुसार "गंगा में आई भारी बाढ़ ने बस्ती का बड़ा हिस्सा बहा दिया। इस विनाश के चिह्न आज भी टीले पर क्षरण निशान के रूप में मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त खुदाई के दौरान प्राचीन गंगा के तल से धुली हुई सामग्री प्राप्त हुई, जो अब टीले से कुछ दूरी पर बहती है और यह सामग्री लगभग 45–50 फीट गहराई से निकाली गई।"[24]

समग्रतः सिंधु सभ्यता के पतन के लिए कई कारण हो सकते हैं, लेकिन अधिकांश तथ्य नदीजन्य कारणों के इर्द–गिर्द दिखाई देते हैं। विभिन्न पुरातत्वविदों के द्वारा किए गए सर्वेक्षण एवं

उत्खनन–अवशेषों की प्राप्ति के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों के अध्ययन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि सिंधु सभ्यता के सभी स्थलों का न सही, मगर नदी तट पर बसे हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल इत्यादि अनेक स्थलों का पतन नदियों की बाढ़ या नदियों के मार्ग में परिवर्तन के फलस्वरूप हुआ। नदियों के मार्ग परिवर्तन और पानी की कमी से उत्पादन में कमी के साथ–साथ व्यापारिक केंद्रों का भी ह्रास हुआ और इन स्थलों के निवासियों को अपने जीवन–निर्वाह के लिए अन्यत्र जाना पड़ा। अगस्त, 2025 में उत्तराखंड में नदियों की बाढ़ ने धराली व हर्षिल जैसी बस्तियों को तहस–नहस कर दिया। अगस्त, सितंबर 2025 में सिंधु, सतलज व रावी नदियों ने पंजाब प्रदेश व पाकिस्तानी पंजाब में काफी ताण्डव मचाया। रावी नदी, जिसे पंजाब में 'रिवर ऑफ सॉरो' कहा जाता है, में 1988, 1993, 2013, 2023 व 2025 में बाढ़ के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ा। यद्यपि प्रागैतिहासिक नगरों के उदभव व पतन के संबंध में निश्चित मत व्यक्त नहीं किया जा सकता, मगर वर्तमान में भारत, चीन, जापान, अमेरिका इत्यादि देशों में नदियों की बाढ़ ने जिस तरह विनाश का तांडव प्रस्तुत किया और जन–जीवन को अस्त–व्यस्त व भयाक्रांत कर दिया, उससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि नदी तट पर बसे हुए सिंधु नगरों का पतन बाढ़ से हुआ होगा और शेष नगर नदियों के मार्ग परिवर्तन के कारण अनाज की कमी व व्यापार में ह्रास के कारण उजड़ गए।

संदर्भ स्रोत –

1. उपिंदर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 136, पियर्सन, दिल्ली, 2019।
2. उपर्युक्त, पृष्ठ 141।
3. उपर्युक्त, पृष्ठ 151।
4. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृष्ठ 55, यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद, 2000–2001।
5. भगवान सिंह, हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य, पृष्ठ 379–80, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2011।
6. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृष्ठ 55, यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद, 2000–2001।
7. किरण कुमार थपल्याल व संकटा प्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, पृष्ठ 306, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 2003 ।
8. नयनजोत लाहीरी, द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द इंडस सिविलाइजेशन, पृष्ठ 156, परमानेंट ब्लैक, दिल्ली, 2009।
9. उपर्युक्त, पृष्ठ 156–157।
10. उपर्युक्त, पृष्ठ 168–169।
11. किरण कुमार थपल्याल व संकटा प्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, पृष्ठ 306–307, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 2003।
12. द एन्ड ऑफ एनसिएंट सिटीज ऑफ द इंडस, पृ 288–290, अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजीकल एसोसिएशन, अप्रैल,1964, वो. 61,न.2।
13. उपिंदर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 187, पियर्सन, नई दिल्ली, 2019।
14. इंटरनेशनल जरनल ऑफ हिस्ट्री, 2019, पृ 52, ISSN 2706–9117।
15. नयनजोत लाहिरी, द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द इंडस सिविलाइजेशन, पृष्ठ 157, परमानेंट ब्लैक, दिल्ली, 2009।
16. किरण कुमार थपल्याल व संकटा प्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, पृष्ठ 304, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 2003।
17. नयनजोत लाहिरी, द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द इंडस सिविलाइजेशन, परमानेंट ब्लैक, दिल्ली, 2009।
18. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृष्ठ 156, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2000–2001।
19. किरण कुमार थपल्याल व संकटा प्रसाद शुक्ल, सिंधु सभ्यता, पृष्ठ 303, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 2003।
20. उपर्युक्त, पृष्ठ 306।
21. उपिंदर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 187, पियर्सन, नई दिल्ली, 2019।
22. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृष्ठ 56, यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद, 2000–2001।
23. उपिंदर सिंह प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 187, पियर्सन, नई दिल्ली, 2019।
24. नयनजोत लाहिरी, द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ द इंडस सिविलाइजेशन, पृष्ठ 157 परमानेंट ब्लैक, दिल्ली, 2009।